बाइबल टीचर

वर्ष 15 | जून 2018 | अंक 7

सम्पादकीय

न बाइबल में जोड़े और न उसमें से घटाएं

सारी मनुष्य जाति को परमेश्वर ने अपना वचन देकर आशीषित किया है। यह वचन हमें बताता है कि हम इस पृथ्वी पर किस लिये हैं तथा यहां से अर्थात पृथ्वी से हम कहां जाएंगे। मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया था तथा उसने उसकी अगुवाई करने के लिये अपना वचन दिया है। यह एक बहुत बड़ी आशिष की बात है। हमें बाइबल के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। बाइबल हमें बताती है कि बिरिया नामक स्थान पर जो लोग थे वे प्रतिदिन वचन में से खोजते थे कि जो बातें सिखाई जा रही है वो यूं ही है कि नहीं? (प्रेरितों 17:11)।

आज लोग यीशु के पीछे चलने का दावा करते हैं परन्तु वे बाइबल की कई शिक्षाओं से अज्ञान है। वे शायद ऐसा सोचते हैं कि बाइबल पढ़ना केवल चर्च के अगुवों का काम है। आज सारे संसार में अनुचित शिक्षायें इसलिये फैली हुई है क्योंकि लोग अपनी बाइबल को पढ़ते नहीं है। बाइबल परमेश्वर का ज्ञान है तथा उसका सत्य है। (यूहन्ना 17:17)। यह हमें स्वर्ग में जाने का मार्ग बताती है। यह बताती है कि मरने के बाद मनुष्य के साथ क्या होगा? (इब्रा. 9:27)।

आज इस संसार में बाइबल के बहुत से शत्रु है। कितने लोग आये और संसार से चले गये परन्तु वे इस पुस्तक को नष्ट नहीं कर सके। आप शायद यह नहीं जानते कि यह संसार में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है। यीशु ने कहा था मेरा वचन कभी लुप्त नहीं होगा (मत्ती 24:35)। बाइबल की एक विशेषता यह है कि इसे परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। (2 तीमु. 3:16-17)। क्योंकि इसे परमेश्वर ने लिखवाया है इसलिये इस पर संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। (2 पतरस 1:21)।

मित्रो, बाइबल सम्पूर्ण है और इसमें फेरबदल करना परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन होगा। अभी हाल ही में मैं किसी से बात कर रहा था, उसने मुझे बताया कि "एण्ड टाइम चर्च" का एक प्रचारक अपने सदस्यों को कह रहा है कि हिन्दी की बाइबल में से परमेश्वर तथा ईश्वर शब्द निकालकर खुदा लिख दो। मुझे यह बात सुनकर इसमें बड़ी मूर्खता सी दिखाई दी। उस प्रचारक को शायद यह नहीं पता कि बाइबल में जोड़ना तथा घटाना एक बहुत बड़ा पाप है। इसे अंग्रेजी में कहते हैं टैम्परिंग या छेड़छाड़ करना और यीशु ने कहा था, मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी

की बातें सुनता है, गवाई देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा। (प्रकाशित 22:18-19)। ऐसे लोगों को अपने जीवनों से बुरी बातों को निकालना है तथा अच्छी बातों को जीवन में जोड़ना है। वचन से छेड़खानी नहीं करनी है।

प्रेरित पौलुस ने भी चेतावनी दी थी कि सुसमाचार तथा वचन में कोई भी फेरबदल नहीं करनी है। वह कहता है, यदि तुमसे स्वर्गदूत भी कुछ फेरबदल करने को कहे तो मत करना। यहां इस प्रकार से लिखा है, "परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाएं तो श्रापित हो" (गलतियों 1:8)। सुसमाचार क्या है? सुसमाचार का अर्थ है कि प्रभु यीशु पवित्र शास्त्र के वचन अनुसार हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। इसके अतिरिक्त यदि कोई प्रचारक सुसमाचार का अर्थ कुछ और बताता है तो वह श्रापित है।

इस सुसमाचार को मानने के लिये हमें यीशु की मृत्यु का बपतिस्मा लेना है। जब हम उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं तो हम उसके साथ गाड़े जाते हैं, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओ में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चले। (रोमियों 6:1-6)। आज लाखों प्रचारक यह प्रचार नहीं करते क्योंकि वे यीशु और बाईबल की शिक्षा के विरूद्ध है। उनकी शिक्षा यह है कि यीशु में विश्वास कर लो तो तुम्हारा उद्धार होगा। वे मरकुस 16:16 का विरोध करते हैं? उन्हें जानना चाहिए कि न्याय के दिन उन्हें इसका उत्तर देना होगा। यीशु ने कहा था- "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:16)। परमेश्वर के वचन के साथ खिलवाड़ करना बड़ी सीरियस बात है। झूठा सुसमाचार हमें नर्क में ले जाएगा।

परमेश्वर का वचन सामर्थपूर्ण है तथा इसमें उद्धार देने की सामर्थ है। इसलिये पौलूस कहता है कि मैं सुसमाचार से लजाता नहीं क्योंकि इसमें उद्धार देने की सामर्थ है। भजन का लेखक कहता है कि यहोवा की व्यवस्था खरी है। मेरे दोस्त इसमें मिलावट न करें। हमें वचन में बिना कोई मिलावट किये हुए इसे मानना है। क्या आपने सुसमाचार की आज्ञा को माना है? जो लोग इसकी अज्ञाओं को मानते हैं वे धन्य है। परमेश्वर अपने वचन से कहता है "धन्य वे है, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा और फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाशित 22:14)। क्या आप धार्मिक रूप से इधर-उधर भटका रहे हैं? जरा सोचिये कि न्याय के दिन आप प्रभु को क्या उत्तर देंगे? (2 कुरि. 5:10)। बाइबल परमेश्वर को वचन बहुत कीमती है। यह आपकी आत्मा को बचा सकता है। अन्त में हम सबका न्याय इसी वचन पर आधारित होगा। (यूहन्ना 12:48)।

यदि आप सच्चे मन से सुसमाचार को मानना चाहते हैं तो यीशु में जो मार्ग,

सत्य और जीवन है विश्वास कीजिये (यूहन्ना 14:6)। क्योंकि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है (इब्रानियों 11:6)। आपको सब बुराई और रीति-रिवाजों से मन फिराना है। (प्रेरितों 17:30)। यीशु के नाम का अंगीकार करें, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, (रोमियों 10:9-10)। अब जब आप यह कर लेते हैं तब, आप बपतिस्मा लेने के लिये तैयार है। पौलुस से कहा गया था, अब क्यों देर करता है उठ बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल (प्रेरितों 22:16) क्या आप तैयार है?

पाप के कारण

सनी डेविड

"सबने पाप किया है, और इसलिये सब परमेश्वर की महिमा से रहित है।" ये शब्द पवित्र बाइबल के हैं। और ये शब्द हमारा ध्यान इस बात पर दिलाते हैं कि पाप का दाम कितना बड़ा और कैसा भयानक है। परमेश्वर की महिमा से रहित होने का अर्थ है, परमेश्वर से अलग हो जाना। परमेश्वर आत्मा है। यानि इंसान की तरह उसकी कोई देह या रूप नहीं है। वह निराकार है। और वह अनन्त है। यानि वह सदा से है और हमेशा रहेगा। और अनन्त परमेश्वर ने आरंभ में इंसान को अपने ही जैसा आत्मिक बनाया था- मनुष्य की देह को मिट्टी से बनाकर परमेश्वर ने उसके भीतर आत्मा को रखा था। सो इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य का स्वभाव दोहरा है। बाहर से तो उसकी देह जगत की अन्य सभी वस्तुओं की तरह नाशमान है। लेकिन भीतर से उसका आत्मिक व्यक्तित्व परमेश्वर की ही तरह अविनाश और अनन्त है। मनुष्य पशुओं के समान नहीं है, जिनका अस्तित्व मरने पर समाप्त हो जाता है। परन्तु परमेश्वर की समानता पर होने के कारण यानि एक आत्मिक प्राणी होने के कारण, मनुष्य उसी की तरह हमेशा वर्तमान और विद्यमान रहेगा। मृत्यु, मनुष्य के जीवन का अन्त नहीं है परन्तु वास्तव में मनुष्य के जीवन का आरंभ है। एक ऐसा आरंभ जिसका अन्त कभी नहीं होगा। इसलिये यदि मनुष्य इस जीवन में पाप के कारण परमेश्वर से अलग है, तो इस जीवन की समाप्ति पर वह हमेशा परमेश्वर से अलग रहेगा। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर की ओर से हर एक इंसान के लिये एक बार मरना और फिर न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों 9:27)।

सो हम देखते हैं कि पाप का दाम केवल इसी जीवन तक सीमित नहीं है, परन्तु यह एक ऐसा विशाल दाम है कि मनुष्य इसका हिसाब कभी नहीं चुका सकेगा। पाप के कारण वह इस वर्तमान जीवन में परमेश्वर से अलग है, और पाप के ही कारण वह आने वाले हमेशा के जीवन में भी परमेश्वर से अलग होकर रहेगा। उन लोगों के बारे में प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि वहाँ वे अनन्त दण्ड भोगेंगे (मत्ती 25:46), और एक अन्य स्थान पर यीशु ने कहा था, कि वहाँ रोना और दांत पीसना

होगा। (मत्ती 25:30)। कभी-कभी लोग किसी इंसान पर आए दुख मुसीबतों को देखकर अकसर कह देते है कि उसे अपने पापों का फल मिल रहा है, या वह अपनी करनी का फल भोग रहा है। और कई बार लोगों को अपने गलत कामों का नतीजा भुगतान भी पड़ता है। जैसे कि एक शराब पीने वाले को बीमारी और गरीबी का सामना करना पड़ता है। या एक चोरी करने वाले को डर और शर्म का और पिटाई का और जेल का सामना करना पड़ता है। पर पाप का परिणाम बड़ा ही भयानक है। सरकार के किसी कानून को तोड़ने पर इंसान को जुर्माना हो सकता है। किसी बड़े से बड़े अपराध की सजा उमर कैद या फांसी की सजा हो सकती है। लेकिन, पाप का दण्ड हमेशा की वह मौत है जिससे इंसान को कभी कोई छुटकारा नहीं मिल सकता, वह एक ऐसी वास्तविकता है जहाँ हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा और जहाँ अनन्त दण्ड होगा। जिसका कभी अंत नहीं होगा।

पृथ्वी पर मृत्यु को अकसर छुटकारा भी कह दिया जाता है। जैसे कि अगर कोई बहुत लम्बी बीमारी के बाद मरता है, तो लोग कह देते है, "कि चलो अच्छा हुआ बेचारे को बीमारी से छुटकारा तो मिला।" लेकिन आत्मिक मृत्यु के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि आत्मिक मृत्यु एक छुटकारा नहीं परन्तु अनन्त विनाश का दण्ड है। मृत्यु का तात्पर्य अलग होने से है। प्राण या आत्मा जब देह को छोड़ देते है, और देह से अलग हो जाते है तो हम उसे मृत्यु कहते है। ऐसे ही जब मनुष्य का आत्मिक सम्बंध पाप के कारण परमात्मा से छूट जाता तो मनुष्य की आत्मिक मृत्यु हो जाती है इसका मतलब यह नहीं है कि उसके अस्तित्व का अन्त हो जाता है, या वह वर्तमान नहीं रहता- परन्तु मृत्यु का वास्तविक अर्थ है जीवन के स्रोत से अलग हो जाना। जब प्रभु यीशु ने कहा था, कि अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे या वे एक ऐसी जगह में प्रवेश करेंगे जहाँ हमेशा का रोना और दांतों का पीसना होगा तो प्रभु के कहने का ठीक यही अर्थ था, कि वे हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर एक ऐसी जगह में रहेंगे जहाँ अत्यंत पीड़ा और कष्ट होगा। उस जगह को बाइबल में नरक और आग की झील भी कहा गया है, और उसी जगह को दूसरी मृत्यु कहकर भी संबोधित किया गया है। (प्रकाशित 21:8)। क्योंकि एक मृत्यु तो वह है जिसमें आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, लेकिन यह दूसरी मृत्यु ऐसी मृत्यु है जिसमें इंसान हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग हो जाता है।

पवित्र बाइबल में लिखा है कि, "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलातियों 6:7, 8)। शरीर के लिये बोने का अर्थ है शरीर के काम करना, और आत्मा के लिये बोने का अर्थ है आत्मा के काम करना। जब मनुष्य अपने शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलता है, तो वह शरीर के काम करता है। पर जो इंसान परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कहने के अनुसार चलता है वह आत्मा के काम करता हैं यानी वह केवल वही काम करता है जिनके विषय में पवित्रात्मा ने परमेश्वर के वचन की पुस्तक में

आज्ञा दी है। परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है कि, शरीर के काम तो प्रकट है, अर्थात् व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके ऐसे और काम है ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के है उन्होंने शरीर की उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।" (गलातियों 5:19-24)।

शारीरिक लालसाएं और अभिलाषाएं मनुष्य को पाप करने पर बाध्य करती है और पाप उस मृत्यु को उत्पन्न करता है, जिसका अर्थ है परमेश्वर से अलग होकर उससे दूर रहना। पर जो इंसान प्रभु यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता मान लेता है; जो अपना जीवन यीशु को सौंप देता है; जो अपना जीवन उसमें होकर व्यतीत करने का निश्चय कर लेता है, वह फिर आगे को पाप नहीं करता। क्योंकि वह जानता है, कि उसने अपना सम्पूर्ण शारीरिक जीवन उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक मसीही होकर शरीर में नहीं रहता या शारीरिक जीवन नहीं व्यतीत करता। पर इसका अर्थ वास्तव में यह है, कि वह शरीर में रहकर भी शरीर के काम नहीं करता; वह संसार में रहकर भी सांसारिक अंधकार के काम नहीं करता। पवित्र बाइबल में लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते है।" (रोमियों 8:1)।

मनुष्य को पाप के भयानक दण्ड और परिणाम से केवल यीशु मसीह ही बचा सकता है। और कोई नहीं बचा सकता। और कोई रास्ता नहीं है। और कोई ताकत नहीं है। बाइबल कहती है।, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।" (प्रेरितों 4:12)।

सो यदि आपने अभी तक अपना जीवन प्रभु मसीह को नहीं दिया है; यदि आप ने अभी तक अपने सारे मन से उसमें विश्वास लाकर उसे ग्रहण नहीं किया है; और यदि आपने सब पापों से अपना मन फिराकर, अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा नहीं लिया है। तो आप अभी भी अपना जीवन अपनी शारीरिक लालसाओं और अभिलाषाओं के अनुसार व्यतीत कर रहे है। और शारीरिक लालसाएं तथा अभिलाषाएं पाप को ही उत्पन्न करती है, और पाप वह वस्तु है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग रखती है। अगर आप एक बार इस बात को वास्तव में समझ लें कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था। और यदि आप सारे मन से उसमें विश्वास करके उसकी आज्ञा को मान ले, तो उसके द्वारा आपको पापों की क्षमा और मुक्ति मिल सकती है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का छुटकारा ठहराया है। वह आप के पापों का प्रायश्चित है।

मनुष्य पृथ्वी पर अपने परिश्रम के द्वारा पाप को बढ़ा रहा है, और पाप के बोझ से दिन-ब-दिन वह दबता चला जा रहा है। परन्तु प्रभु यीशु ने जैसा कि उस समय लोगों से कहा था, आज भी वह यही कह रहा है, कि "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जुआ (या मेरा बोझ) अपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।" (मत्ती 11:28, 29)।

कोई इंसान जमीन पर इस से बड़ा और कोई काम नहीं कर सकता, कि वह यीशु के पास आकर अपनी सारी जिंदगी को हमेशा के लिये उसके हवाले कर दे।

क्या आप ने अपने जीवन को उद्धारकर्ता यीशु को सौंप दिया है? यदि नहीं, तो मेरी आशा है कि आप जल्दी ही ऐसा करेंगे। क्योंकि उसके अतिरिक्त पाप से उद्धार पाने का और कोई मार्ग नहीं है। पवित्र बाइबल कहती है कि एक दिन ऐसा आएगा जबकि पृथ्वी और उस पर की सब वस्तुएं नाश हो जाएंगी, पर जो इंसान परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह हमेशा परमेश्वर के साथ उसके स्वर्ग में विद्यमान रहेगा।

परमेश्वर की चेतावनी

जे. सी. चोट

आज के इस युग में मनुष्य ने चेतावनी देने के कई यंत्र बना लिये है। आग लगना, मौसम का हाल बताना तथा और भी कई प्रकार के यंत्र जो घटित होने वाली बातों का पूर्व अनुमान लगा लेते हैं। इस सबसे यह फायदा होता है कि पूर्व-सूचना मिलने से बहुत सारी जानो को तथा हानि से बचा जा सकता है। कई स्थानों पर बाढ़े आती है तूफान आते है और पहले से चेतावनी मिलने पर बहुत सारे नुकसान से बचा सकता है। कई स्थानों पर चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया जाता और इसलिये लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

बाइबल परमेश्वर द्वारा दी गई ऐसी पुस्तक है जिसमें कई प्रकार की चेतावनियां दी गई है। परमेश्वर मनुष्य को जानता है, उसकी आवश्यकताओं को जानता है। वह यह भी जानता है कि उसके लिये अच्छा क्या है? इसलिये हम देखते हैं कि मनुष्य को वो बताता है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है? जब मनुष्य परमेश्वर की बात को सुनता है तथा उसकी आज्ञाओं पर चलता है तब उसे इससे लाभ होता है। परन्तु जब मनुष्य अपनी आंखें बंद कर लेता है तथा परमेश्वर की बातों को नहीं मानता तब हम देखते हैं कि उसको इसका नुकसान उठाना पड़ता है। (रोमियों 11:22)।

आदम और हव्वा को परमेश्वर ने आज्ञा दी थी तथा कहा था कि तुम वृक्ष का वो फल न खाना परन्तु उन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी और उन्होंने परमेश्वर की

आज्ञा को तोड़ा। बाइबल हमें इस प्रकार से बताती है, "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है : पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। (उत्पत्ति 2:16, 17) फिर हम जानते हैं कि हव्वा ने शैतान की बात मानी तथा वो फल खा लिया और इस प्रकार से उसकी आज्ञा को तोड़ा (उत्पत्ति 3)।

उत्पत्ति 6:5-8 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से परमेश्वर ने पृथ्वी पर सारी बुराई देखी और उसने यह कहा कि मैं मनुष्य को बनाने से पछताता हूं। परमेश्वर ने मनुष्य को यह अवसर दिया था कि वह अपना मन बुराई से बदल ले परन्तु नूह और उसके परिवार को छोड़ कोई परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये तैयार नहीं था। बाइबल हमें बताती है कि किस प्रकार से नूह लोगों को प्रचार करता रहा, लेकिन किसी ने भी बुराई से मन नहीं फिराया और जब एक बड़ा जल प्रलय आया उसमें वे सब लोग नाश हो गये। (इब्रानियों 11:7; 1 पतरस 3:10)।

परमेश्वर ने कहा था सदोम और अमोरा की बुराई के कारण परमेश्वर उन्हें नाश करेगा। परमेश्वर से इब्राहिम ने बिनती की कि उन्हें माफ कर दे क्योंकि वो जानता था कि लूत और उसका परिवार वहां पर रहते हैं। और दूसरे भी धर्मी लोग शायद वहां हो। परमेश्वर ने इब्राहिम से कहा मुझे बता कितने लोग है जिनके कारण मैं अपना मन बदल लू। वहां पर दस लोग भी ऐसे नहीं मिले जिसके कारण वो स्थान नाश होने से बच सके। हम आगे पढ़ते हैं कि जब वहां दस धर्मी जन भी नहीं मिले तब दो स्वर्ग दूतों ने सदोम में जाकर लूत और उसके परिवार को चेतावनी दी कि सदोम शहर छोड़कर चले जाएं क्योंकि वहां आग-गंधक बरसने वाले हैं। (उत्पत्ति 19 अध्याय)।

यीशु ने अपने प्राण इस सारे जगत के लिये दिये। वह क्रूस पर मारा गया, गाड़ा गया तथा तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। अपने जी उठने के पश्चात उसने आज्ञा दी कि सुसमाचार सारे संसार में ले जाया जाये। "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा" (मरकुस 16:16)। (इब्रानियों 11:6; मत्ती 10:37, 33 तथा लूका 13:3)। पौलुस ने चेतावनी दी थी कि जो कोई दूसरे सुसमाचार का प्रचार करेगा वो श्रापित होगा। (गलतियों 1:6-9)। यह भी कहा गया है कि जो वचन में जोड़ेगा या घटायेगा उन्हें दण्ड दिया जायेगा (प्रकाशित 22:18, 19)।

यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाने का वायदा किया था (मत्ती 16:18) तथा उसकी स्थापना प्रेरितों दो अध्याय में हम पढ़ते हैं, पिन्तेकुस के दिन हुई थी। तब से अब तक विभिन्न प्रकार की कलीसियाएं बन चुकी है। लेकिन यीशु ने कहा था "प्रत्येक वो पौधा जो मेरे पिता ने नहीं लगाया, वह उखाड़ा जायेगा" (मत्ती 15:13)। अब इसके विषय में सोच लीजिये कि कौन-सा पौधाा पिता ने लगाया है अर्थात आपकी कलीसिया को यीशु ने बनाया है या किसी मनुष्य ने? आपके लिये चेतावनी यह है कि यदि आप किसी ऐसी कलीसिया में है जिसे मनुष्य ने बनाया है तो उसमें से निकलकर प्रभु की कलीसिया में आइए। क्या आपकी कलीसिया का नाम बाइबल

में है? मसीह की कलीसिया का नाम बाइबल में है। (रोमियों 16:16)।

जब आप इस पृथ्वी पर है उसने यह वायदा किया है कि वह वापस आयेगा (यूहन्ना 14:3)। प्रेरित पोलुस कहता है कि वह उनसे पलटा लेगा जो उसके सुसमाचार को नहीं मानते। (2 थिस्स 1:7-9) ।

इसलिये मित्रो हमें चेतावनियां दी गई है। यदि हम बुद्धिमान हैं तो हमें प्रभु की बात सुननी चाहिए। जब हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तब वह हमारी सहायता करेगा। हम जानते हैं और बाइबल में चेतावनी दी गई है कि "पाप की मजदूरी मृत्यु" (रोमियों 6:23)।

दोष लगाना और न्याय करना, दोनों में बड़ा फ़र्क है

टिम निकोलस

दोष लगाना बड़ा आसान काम है। जो लोग अपने साथियों की खामियों को मान लेते हैं, उन्हें इसमें कोई दिक्कत नहीं होती। ये लोग बड़े आराम से अपने कुछ नियम बना लेते है और उन्हीं के अनुसार दूसरों में खोट निकालते है। ऐसे नियम दूसरों के काम करने से पहले या बाद में, कभी भी बनाए जा सकते है। वे अपने स्वभाव से हल्के होते है और अपने आप ही अपने बनाए आदेश जारी करने के लिए आसानी से बदल जाते है। वे अन्त में एक-दूसरे के विरूद्ध नियम बना सकते है, परन्तु फिर वे नियम लागू हो जाते हैं। ये स्वयं भी न्यायी किसी भी पक्ष के विरूद्ध इस्तेमाल करने के लिए अपने साथ हथियार रखते हैं। यह निर्णय लेने के बाद कि हमला करना है या बचाव, वे उसी के अनुसार नियम भी चुनते हैं और अपने पक्ष में इस्तेमाल करके उसका लाभ उठाते हैं। वे अपने बनाए नियमों का इस्तेमाल बड़े चतुराई से करके, किसी भी बुराई को उचित ठहरा सकते हैं। वे नैतिक तौर पर निष्पक्ष मामलों को अपनी पसंद के अनुसार काला रंग देकर उस पर दोषी ठहरा देते हैं या सफेद रंग देकर उसे शुद्ध ठहरा देते हैं। परन्तु उनका खुद का बनाया यह नियम परमेश्वर की ओर से गलत ठहरता है।

"दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्टा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति देखकर निकाल सकेगा" (मत्ती 7:1-5)।

"हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को

कड़वा करके मानते है। हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान है।" (यशायाह 5:20, 21)।

यूहन्ना और यीशु दोनों को ही ऐसे लोगों के द्वारा जो अपने विरोधियों के लिए मौका देखकर नियम बनाते हैं, सताया गया था।

"मैं इस समय के लोगों की उपमा किससे दूं? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं, 'हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे; हमने विलाप किया, और तुमने छाती नहीं पीटी।' क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता, और वे कहते हैं, 'उसमें दुष्टातमा है।' मनुष्य का पुत्र खाता-पिता आया, और वे कहते है 'देखो, पेटू, पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने वालों और पापियों का मित्र! पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है। (मत्ती 11:16-19)।

आप अगर कोई अच्छी सलाह नहीं दे सकते हो तो ऐसी आलोचनाओं से बचें। यदि ऐसे लोग आपके "मित्रों" में से हैं तो उनके साथ संबंध रखने के लिए आपको ध्यान रखना चाहिए और उनके द्वारा किसी भी झगड़े में आपका "पक्ष" लेने से बचना चाहिए। उनके कदम फिसलने वाले हैं और उनके तर्कों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उनकी "सहायता" हर समय सच्चाई को नकारा कर देती है, और आपका उनके साथ रहना भलाई के लिए हानिकारक हो जाएगा। परमेश्वर के मापदण्ड बनाए जा चुके है। वे प्रमाणिक हैं और उन्हें बदला नहीं जा सकता। उसने बता दिया है कि क्या गलत है और क्या सही। क्या अच्छा है और क्या बुरा। उसने स्पष्ट बता दिया है और सब के लिए उन्हें अपनी बाइबल में लिख दिया है। उसकी संतान वे लोग है जिन्होंने अपने विचारों को त्याग दिया है। उन्हीं विचारों को अब वे दूसरों पर थोपना नहीं चाहते। वे जब परमेश्वर के बताए नियम अपने जीवन में लागू करते हैं और फिर ऐसा ही करने के लिए लोगों को सिखाते हैं तो "ठीक-ठीक न्याय" करते हैं (यूहन्ना 7:24)। वे परमेश्वर की समझ का इस्तेमाल करते हैं न कि अपनी समझ का।

आपके जीवन व चाल-चलन के लिए जो कुछ भी परमेश्वर का वचन बताता है, उस पर ध्यान दें। जो लोग परमेश्वर के वचन के अनुसार आपकी गलतियां आपको बता सकते हैं और बताते भी हैं, उन्हें अपना मित्र समझें, जो परमेश्वर के वचन को जानते हैं। परन्तु जो आपकी खामी आपको दिखाते नहीं है, वास्तव में वे न तो आपके मित्र है और न परमेश्वर के सेवक है।

परमेश्वर की भूमिकाएं दर्शाते नाम

ह्युगो मेकोर्ड

अपने लोगों के जीवनों में प्रभु की भूमिका के कारण पुराने नियम में उसे कई पदनाम दिए गए हैं। इस पाठ में हम उन नामों में से कुछ के बारे में जानेंगे और समझेंगे कि हमें परमेश्वर को कैसे देखना चाहिए।

"राजा"

यशायाह ने प्रभु को मेलेक अर्थात "राजा" के रूप में ऊंचे पर महिमा पाए हुए; उसके कारवां को, उसकी महिमा से भरे मन्दिर में, सिंहासन पर बैठा हुआ देखा था। "यहोवा अनन्तकाल के लिए महाराज है" (भजन संहिता 10:16क)। उसकी प्रभुता सदा के लिए है: "देखो, जातियां तो डोल की एक बूंद वा पलड़ों पर की धूलि के तुल्य ठहरी" (यशायाह 40:15क)। जब "जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान था" (भजन संहिता 29:10क), तो उसका निर्णय सुनिश्चित था। अकेला वही परमेश्वर है।

"युग-युग के राजा" (प्रकाशितवाक्य 15:3) को यह अच्छा लगा कि मसीही युग के दौरान आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार अपने पुत्र को दे (मत्ती 28:18)। पीलातुस के प्रश्न कि "तो क्या तू राजा है?" (यूहन्ना 18:37क), का यीशु ने स्पष्ट उत्तर दिया था: "मैंने इसलिए जन्म लिया, और इसलिए जगत में आया हूं" (यूहन्ना 18:37ख)। परन्तु, उसने उस हाकिम को यह स्पष्ट कर दिया कि उसका राज्य इस जगत का नहीं है (यूहन्ना 18:36)। जब शैतान ने उसे जगत के सारे राज्यों और उनकी महिमा देने की पेशकश की तो यीशु ने सांसारिक अधिकार लेने से इंकार कर दिया (मत्ती 4:8, 9)। उसने अपने अनुयायियों को उसे राजा बनाने की अनुमति देने से इंकार कर दिया (यूहन्ना 6:15)। जब यरूशलेम में गधे के बच्चे पर सवार होने के समय उसके राजा होने की घोषणा हो रही थी, तो उसके पास कोई सिपाही नहीं था; किसी को भी यह नहीं लगा कि कैसर का विरोधी आ गया है (यूहन्ना 12:15)। वास्तव में उस समय यीशु अभी राजा नहीं था अर्थात उसने स्वर्ग में वापस जाने तक राजा नहीं होना था। फिर भी उसने स्वेच्छा से अपनी स्तुति करने वाले लोगों की बात मान ली जिनके मनों पर वह पहले ही राज कर रहा है।

आज्ञा मानना सीखकर (इब्रानियों 5:8) और मृत्यु पर विजय पाकर (इब्रानियों 2:14) वह ऊंचे पर चढ़ गया। यीशु के स्वर्ग में ऊपर पहुंचने पर वहाँ की गलियों में बड़ा आनन्द मनाया जाने लगा। फाटकों तथा दरवाजों से यह शोर आ रहा था:

हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो
हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।
(भजन संहिता 24:7)

जब स्वर्ग के फाटकों और द्वारों ने पूछा "वह प्रतापी राजा कौन है?" तो उत्तर मिला "परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है" (भजन 24:8) और "सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है" (भजन 24:10)।

उसका वास्तविक राज्याभिषेक स्वर्गारोहण के दस दिन बाद हुआ था; जिसे पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था। परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को यह कहते हुए बुलाया, "कि तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं" (भजन संहिता 110:1)। अब अंतिम शत्रु के नाश होने तक परमेश्वर के स्थान पर वह राज करेगा (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)। सांकेतिक तौर पर कहें, तो परमेश्वर ने पिन्तेकुस्त के रविवार अपने पुत्र के सिर पर अभिषेक का तेल उंडेला (इब्रानियों 1:8, 9), जो संभवत: मई 26, सन 30 ई. था। यीशु सचमुच "पराधन्य और अद्वैत अधिपति

और राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु" (1 तीमुथियुस 6:15) बन चुका था।

यद्यपि यीशु अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा था, परन्तु उसका राज्य सांसारिक (पृथ्वी का) और शारीरिक नहीं होना था। उसका सिंहासन "दया के साथ" स्थापित किया गया था और इस पर बैठने वाले को "सोच विचारकर सच्चा न्याय" करना था और धर्म के काम पर तत्पर रहना था (यशायाह 16:5)। उसका राज्य "धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता" (रोमियों 14:17, 18क)।

जब वह सब लोगों को मुर्दों में से जिलाएगा, तो अंतिम शत्रु अर्थात मृत्यु का नाश हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:26)। फिर स्वयं भी, सब लोगों और स्वर्गदूतों के साथ, वह उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया था, ताकि परमेश्वर सब में सब कुछ हो (1 कुरिन्थियों 15:28)।

"छुड़ानेवाला"

मनुष्य के साथ परमेश्वर को व्यवहार की भूमिका को दर्शाता एक और शब्द है बचानेवाला, जो किसी बदला लेने वाले, निर्दोष ठहराने वाले या छुड़ाने वाले की ओर संकेत करता है। इस शब्द का इस्तेमाल सुलैमान ने नीतिवचन 23:10, 11 और अय्यूब की पुस्तक 19:25-27 में किया था।

निर्दोष ठहराने वाला: छुड़ानेवाला के रूप में परमेश्वर एस्राएल का बदला लेने वाला या उसे निर्दोष ठहराने वाला था। उसके अनुसार सीमा रेखाओं को बढ़ाकर भूमि चुराना एक गंभीर अपराध था। उसकी नजरों में अनाथों के अधिकारों का अतिक्रमण करना भी गंभीर अपराध था (नीतिवचन 23:10)। अपराध करने वालों को छुड़ानेवाला अर्थात एक छुटकारा देने वाले की आवश्यकता होती थी। सुलैमान ने इसे परमेश्वर की एक भूमिका के रूप में देखा। उसने परमेश्वर का वर्णन "सामर्थी" के रूप में किया और कहा कि "उनका मुकदमा वही लड़ेगा" (नीतिवचन 23:11)।

अय्यूब के कष्ट के समय कोई भी, यहाँ तक कि उसकी पत्नी भी उसके चरित्र को निर्दोश नहीं ठहरा रही थी, परन्तु वह जानता था कि उसका एक मित्र है :

मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अंत में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिए करुंगा, और न कोई दूसरा... (अय्यूब 19:25-27)।

उसे यह तो पता नहीं था कि मरने से पहले परमेश्वर उसके चरित्र को निर्दोष ठहराएगा या नहीं। इस जीवन में निर्दोष ठहरने की उसे कोई उम्मीद नहीं थी। वह केवल मरकर और दुख से छुटकारा पाना चाहता था। परन्तु उसे जीवित और निर्दोष ठहाराने वाले पर पूर्ण विश्वास था जिसने उसे धूल में से अविनाशी आंखों से परमेश्वर को देखने के लिए जिला देना था।

दाम चुकाने वाला: कई बार छुड़ानेवाला शब्द का विशेष अर्थ एक दाम चुकाने वाले के रूप में किया जाता है। किसी इस्राएली को अपनी भूमि बेचने के लिए विवश किए जाने पर उसके सबसे निकटतम संबंधी को मूसा की व्यवस्था के अनुसार उस भूमि को खरीदने का विशेष अधिकार होता था (लैव्यव्यवस्था 25:23-25)। ऐसे निकटतम संबंधी को छुड़ानेवाला अर्थात दाम चुकाने वाला कहा जाता था। रूत की पुस्तक में एक

दिलचस्प उदाहरण दिया गया है। जब नाओमी के रिश्ते में सबसे नजदीकी व्यक्ति ने छुटकारे के अधिकार से इंकार कर दिया, तो बोअज उसका उद्धार करनेवाला अर्थात छुड़ाने वाला बन गया। उसने न केवल वह भूमि ही खरीदी, बल्कि उस सौदे में एक दुल्हन भी मिल गई।

परमेश्वर भी बाबुल की दासता में रहने वालों का उद्धार करनेवाला अर्थात छुड़ाने वाला अर्थात दाम चुकाने वाला था। वह उन्हें एक नये मन और नई आत्मा जरुब्बावेल, एज्रा और नहेमायाह की अगुआई में वापस लाया था (यहेजकेल 36:26)। इस्राएल का उद्धारकर्ता सामर्थी था, उसने लोगों का मुकदमा भली भांति लड़ना था (यिर्मयाह 50:34)। उनके मार्ग को पवित्रता का मार्ग कहा जाना था। अशुद्ध लोगों ने वहाँ से नहीं गुजरना था; अर्थात यह मार्ग उन लोगों के लिए था जिनका दाम चुकाया गया था। उनके मन और आत्मा नए होने थे, पवित्रता का मार्ग उनके लिए साफ होना था। पर्यटकों को, यहाँ तक कि सीधे लोगों को भी, समझ होनी थी कि धार्मिकता के राजमार्ग पर कैसे चलना है। परमेश्वर का दाम चुकाए हुए लोगों को गाते हुए सिय्योन लौट जाना था। उनके मन में सदा-सदा का आनन्द होना था; उन्हें आनन्द और प्रसन्नता मिलनी थी जबकि दुख और उदासी दूर हो जानी थी (यशायाह 35:8-10)। परमेश्वर, जिसने इस्राएल को बनाया था, अब उनके उद्धारकर्ता के रूप में एक और श्रेष्ठता की घोषणा कर सकता था, "मैंने तुझे छुड़ा लिया है" (यशायाह 43:1)।

पाप से मुक्ति किसी विदेशी शक्ति के हाथों से छुटकारे से बढ़कर है (कुलुस्सियों 1:14)। परमेश्वर ने अपना छुटकारा यीशु के द्वारा उपलब्ध करवाया, जिसने अपने आपको हमारे छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया (मत्ती 20:28)। उसने अपना "बहुमूल्य लोहू" (1 पतरस 1:19) "पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए" (इब्रानियों 9:15) ही नहीं, बल्कि "सारे जगत के पापों" (1 यूहन्ना 2:2) के लिए भी दिया। इस प्रकार उद्धारकर्ता अर्थात छुड़ाने वाले के रूप में यीशु ने "अनन्त छुटकारा" उपलब्ध करवा दिया ताकि जो उसके आज्ञाकारी हो वे "प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें" (इब्रानियों 9:12, 15)।

जीवित विश्वास

(याकूब 2:14-2, 6)

बिल हूटन

आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कैलौरी-कॉशियंस हो या कहता है कि मेरा वज़न बढ़ रहा है? अमेरिका के लोग सचमुच में कैलोरी-कॉशियंस है। करियाने की दुकानों में खाने और पीने के "लो कैलोरी" वाले बड़े-बड़े सेक्शन होते हैं। सॉफ्ट ड्रिंक बनाने वाले बताते हैं कि डाइट ड्रिंकों की बिक्री कई सामान्य सॉफ्ट ड्रिंकों की बिक्री से बढ़कर होती है। परन्तु कैलोरी क्या है? यदि तकनीकी तौर पर कहें तो कैलोरी भोजन में पाई जाने वाली ऊर्जा की इकाई है। व्यावहारिक रूप में कहें तो कैलोरी खाने और पीने में पाया जाने वाला वह दुष्ट तत्व है, जो वजन और मोटापा

बढ़ाता है। पर क्या आपने कभी कैलोरी देखी है? बेशक नहीं, क्योंकि इसे नंगी आंखों से देखा नहीं जा सकता। पर हममें से हर किसी ने कैलोरी का परिणाम देखा है। इस प्रकार, विश्वास की तुलना कैलोरी से की जा सकती है। विश्वास मसीही व्यक्ति और मसीही जीवन के लिए "मुख्य" शिक्षा है (इफिसियों 2:8, 9, 2 कुरिन्थियों 5:17; इब्रानियों 11:6; रोमियों 14:23)। याकूब के अनुसार हम विश्वास को देख नहीं सकते, पर विश्वास के परिणाम को आसानी से देखा जा सकता है। स्पष्टतया याकूब ने कई ऐसे लोगों के बारे में सुना था जो कहते थे कि उन्हें विश्वास है, परन्तु उनके विश्वास के परिणाम को देख पाना कठिन था। याकूब विश्वास ओर कामों के बीच संबंध को देखना चाहता है। विश्वास का प्रदर्शन आवश्यक है।

हमारे वचन पाठ याकूब 2:14-26 के उस अर्थ को समझने के लिए जो याकूब बताना चाहता था, खोलने से पहले एक टिप्पणी की जानी चाहिए। यह वह हवाला है जिसे आमतौर पर यह साबित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि याकूब और पौलुस एक दूसरे के विरूद्ध थे। रोमियों 3:28 और गलातियों 2:16 जैसी आयतों का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया जाता है कि पौलुस नहीं मानता था कि "काम" उद्धार के लिए आवश्यक है; जबकि याकूब 2:14-26 में याकूब बात करता है कि काम कितने आवश्यक है। उनके विरोधी प्रतीत होने वाली बात पर टिप्पणी करते हुए अलेग्जैंडर रॉस ने कहा है, "वे तलवारें ताने एक दूसरे के सामने खड़े विरोधी नहीं है; वे तो सुसमाचार के विभिन्न शत्रुओं का सामना करते हुए एक दूसरे की ओर पीठ करे खड़े है।" पौलुस ने यहूदी कानून दावों का सामना किया जो इस बात पर जोर देते थे कि परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के लिए कर्म आवश्यक है, जबकि याकूब ने उन लोगों का सामना किया जो यीशु के साथ संबंध होने का दावा करते थे पर दैनिक जीवन में उस संबंध के प्रभाव को कम करते थे। याकूब और पौलुस के बीच में अंतर आरंभ की बात पर है। पौलुस परमेश्वर की क्षमा के महान मुख्य तथ्य के साथ आरंभ करता है, जिसे कोई मनुष्य कमाकर, जीतकर या हक्क से नहीं पा सकता। याकूब मसीही कहलाने की बात से आरंभ करता है और इस बात पर जोर देता है कि जब तक व्यक्ति अपने कामों के द्वारा अपने मसीही होने को साबित नहीं कर देता वह कदाचित मसीही नहीं है। इसलिए याकूब और पौलुस एक दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि वे तो एक दूसरे के पूरक है। दोनों का संदेश पूर्ण रूप में मसीही विश्वास के लिए आवश्यक है।

जब विश्वास, विश्वास नहीं होता (2:14-17): धर्मशास्त्र का यह भाग बड़े रूखे ढंग से एक प्रश्न के साथ आरंभ होता है। याकूब मसीही कहलाने वालों को अपने कार्य पर विचार करवाना चाहता है। वह कहता है, "हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है कि वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?" (2:14)। वह विश्वासियों को विश्वास को दिखाने के व्यक्तिगत मूल्य पर विचार करने की चुनौती देता है, जो कामों के रूप में दिखाई नहीं देता। स्पष्टतया याकूब "कहता है" शब्द पर ज़ोर दे रहा है। संसार समर्पित मसीही के सुन्दर अंगीकार से बड़ी गवाह नहीं है। परन्तु अपने

विश्वास से बिना "कर्मों" के यह कितना सार्थक है? यदि विश्वास केवल बातें ही है, तो याकूब कहता है कि इसमें उद्धार दिलाने की सामर्थ नहीं है।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए याकूब एक उदाहरण देता है: "यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हो, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ?" (2:15,16)।

जो व्यक्ति सलामती की बातें करता है, पर भोजन या कपड़े का कोई प्रबंध नहीं करता, वास्तव में उसने कुछ नहीं किया। क्या हम कभी इसके दोषी हो सकते हैं? जब हम बीमारों, भूखों और बेघरों के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या हम उनकी सेवा के लिए कुछ करते हैं? क्या हम अपने विश्वास को बोलने पर उसे व्यवहार में न लाने के दोषी नहीं हैं? यदि हम अपने विश्वास को केवल एयर कंडीशन क्लासरूम में बैठकर ही व्यक्त करते है, तो क्या हम अपने विश्वास को केवल बताने पर उसे व्यवहार में न लाने के दोषी नहीं हैं?

इसीलिए याकूब कहता है, "वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है" (2:17)। कर्म ही वह ढंग है जिससे किसी का विश्वास वास्तविक या जीवित माना जा सकता है। इस बात पर ज़ोर देते हुए याकूब पूरी पुस्तक में पाए जाने वाले संदेशों में से एक वास्तविक होने के लिए मसीहियत का व्यावहारिक होना आवश्यक है, पर ज़ोर दे रहा है।

एक आपत्ति का उत्तर (2:18:20): यहाँ पर याकूब एक काल्पनिक विरोधी के विचार को दिखाता है, जो उसके तर्क देने पर आपत्ति करता है। आपत्ति करने वाले का तर्क कुछ इस प्रकार होगा: "हम सब अलग-अलग हैं और निश्चय ही आप इस तथ्य को मानेंगे। कुछ लोग दूसरों से अधिक प्रदर्शनकारी होते हैं। हम में से और लोग अधिक गंभीर हैं। हो सकता है कि आप अपना विश्वास कर्म में अधिक इसलिए दिखा पाते है क्योंकि आप अधिक बहिर्मुखी हैं। दूसरी ओर हम में से दूसरे लोग अपने विश्वास को अपने तक ही रखते हैं, पर है यह भी विश्वास ही।" याकूब इस तर्क का उत्तर यह कहकर देता कि पूरा तर्क ही गलत अवधारणा पर आधारित है। विश्वास और कर्मों को मसीही लोगों के रूप में रहने के लिए हमारे जीवनों से अलग किया जा सकता। परमेश्वर ने उन दोनों को एक-दूसरे के साथ जोड़ा है। इसलिए यह कुछ लोगों के विश्वास में बेहतर होने और अन्यों के कर्मों में बेहतर होने की बात नहीं है। विश्वास और कर्म साथ-साथ चलते हैं। आयत 18 में याकूब "काम की बात" पर आकर आपत्ति करने वाले के विश्वास को दिखाने की बात करता है। ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि उसे मालूम है कि विश्वास केवल उसी से दिखाया जा सकता है, जो यह करता है।

अन्त में याकूब अपनी बात से उदाहरण के रूप में सरल लिपि का इस्तेमाल करते हुए अपने आत्मसंतुष्ट आपत्ति करने वालों को चौंका देता है (2:19)। आपत्ति करने वाले क्या विश्वास करते हैं? वे एक परमेश्वर और यीशु के परमेश्वर होने में विश्वास रखते हैं। तो क्या दुष्टात्मा भी तो विश्वास करते हैं। परमेश्वर जिस विश्वास की इच्छा

और उम्मीद करता है वह केवल विश्वास करने और कांपने से बढ़कर है। हो सकता है कि किसी व्यक्ति के मन में रौशनी हो और यहाँ तक कि वह अपने दिल में कांपता भी हो तो भी हो सकता है कि वह सदा के लिए खो जाए। जो विश्वास परमेश्वर चाहता है, उसमें कुछ बढ़कर है, जिसे देखा और पहचाना जा सके यानी आज्ञाकारी, बदला हुआ जीवन।

इब्रानी इतिहास से प्रमाण (2:21-26): अब उन प्रमाणों में पुराने नियम में अपने लोगों से परमेश्वर की उम्मीदों में याकूब 2:20 इस सामग्री का परिचय ऐसे करता है, जैसे वह अभी भी अपने काल्पनिक विरोधी के साथ बहस कर रहा है। प्रमाण के दोनों सबूतों में, व्यक्ति परमेश्वर में अपने मजबूत विश्वास से काम करने के लिए प्रेरित थे न कि स्वाभाविक मानवीय दयालुता की भावनाओं से।

21 से 24 आयतों में याकूब अब्राहम के जीवन का प्रमाण देता है। अब्राहम को "यहूदी जाति का पिता" और "विश्वासियों का पिता" भी माना जाता था। अब्राहम को परमेश्वर में भरोसा रखने, आज्ञा मानने, विश्वास में बढ़ने में संघर्ष करना पड़ा था। उसके जीवन के इन आरंभिक संघर्षों पर विचार करें, अपनी बुलाहट का आधा आज्ञापालन करें, फलस्तीन में सूखे के दौरान मिस्र में भाग जाना, मिस्र में रहते हुए सारा के साथ अपने संबंध के बारे में झूठ बताना और परमेश्वर द्वारा उसकी पत्नी के संतान होने की बात कहने पर हंसना। अब्राहम विश्वास के इस नमूने में बढ़ा। किसी ने याकूब की बात कि व्याख्या करते हुए खूब कही है, "अब्राहम का उद्धार विश्वास के साथ कर्मों से नहीं, बल्कि उस विश्वास के साथ हुआ जो कर्म करता है।" अब्राहम के विश्वास पर कोई संदेह नहीं है, क्योंकि उसने इसे अपने जीवन में दिखाया।

दूसरा सबूत जो याकूब देता है, वह विश्वास है जो रहाब के कामों में दिखाया गया था। क्या रहाब का "मुर्दा" विश्वास था। जो मात्र बौद्धिक अनुभव है, और उसने जासूसों के लिए कुछ नहीं किया? क्या उसे विश्वास था जिससे मन में रोशनी हुई और उसकी भावनाएं जगी परन्तु अभी भी जासूसों के लिए कुछ नहीं किया। कहानी की सुन्दरता यह है कि रहाब का "जीवित" विश्वास था। वह जो विश्वास करती थी उसे उसने अपने काम के द्वारा दिखाया। उसने इस्राएलियों के यहोवा में विश्वास किया; उसने जासूसों को छिपाया और उन्हें दूसरे रास्ते से नगर के बाहर भेज दिया।

जो कोई पूछे उसे उत्तर देने को तैयार रहो

(1 पतरस 3:8-22)

डुएन वार्डन

कुछ वर्ष पूर्व पश्चिमी यूरोप में प्रवचन सभाओं के दौरान, मुझे कनाडा, अमेरिका, हॉलैंड, बैलज्यिम, फ्रांस और स्विट्जरलैंड और पश्चिम जर्मनी के मिशनरियों के साथ समय बिताने का कुछ समय मिला। पश्चिम जर्मनी में हम गेमुण्डन नामक एक गांव के पास एक यूथ कैंप के दौरान मिले। कई देशों के प्रतिनिधि वहाँ थे; कई लोग

भाषणशृंखला में भाग लेने के लिए दूर-दूर से आए थे। मुझे अपने कंधे थप थपाना अच्छा लगता है कि वे लोग मेरे भाषण सुनने के लिए आए हैं, परन्तु जब मैंने देखा और सुना तो साफ हो गया कि वे एक-दूसरे की संगति में मगन थे। मसीह के लिए उनका जोश और एक-दूसरे के लिए प्रेम साफ दिखाई दे रहा था; मुझे लगा कि ये भावनाएं बड़े संघर्ष के कारण मिली है। मैंने अन्य स्थानों पर भी ऐसी भावनाएं देखी हैं जहाँ संख्या छोटी होती है और समस्याएं बड़ी, मसीही लोगों को प्रभु पर निर्भर होना और सामर्थ के लिए एक-दूसरे की ओर देखना आवश्यक है।

पश्चिमी यूरोप के अपने भाइयों के साथ सप्ताह भर के अध्ययन और काम करने से मुझे एक ऐसे समाज के साथ भाईचारे के बोध का अनुभव हुआ, जो मुझे लगता है कि एशिया माइनर के आरंभिक लोगों के समाज से अधिक भिन्न नहीं था। पतरस ने अपनी पहली पत्री उन मण्डलियों के नाम लिखी, जो संख्या में छोटी और बड़ी रुकावटों का सामना कर रही थीं, बड़ी अर्थात् सूखी कलीसिया के सदस्यों को हो सकता है कि मसीह में जीवन और संसार में जीवन की सीमाओं की समझ न आए, परन्तु पतरस के पत्रों के मूल पाठकों के सामने ऐसी कोई परीक्षा नहीं थी। शत्रु उन्हें चुनौती देते, उन पर सवाल दागते और उनके विरूद्ध हास्यास्पद आरोप लगाते थे। उन्हें अपने विश्वास के उत्तर देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। पतरस ने उन्हें सुझाव दिया कि मसीही ढंग अपमान का उत्तर आशीष के साथ देना (3:9), बुराई का उत्तर भलाई के लिए उत्तेजित होना (3:13) और आरोपों का उत्तर मसीह के संदेश के साथ देना है (3:18)।

अपमान का उत्तर आशीष के साथ देना (3:8-12): कुछ उत्तरों में बोलने की आवश्यकता नहीं होती। वे मसीही लोगों के व्यवहार के ढंग से मिल जाते हैं। अपने पाठकों को शब्द और तर्क देने के बजाय पतरस ने जीवन के ढंग का आग्रह करते हुए आरंभ किया। इसमें एक तर्कसंगत क्रम है। मसीही लोग जब तक यह दिखाते नहीं है कि प्रभु की शिक्षाएं केवल शिक्षाएं नहीं है, तब तक संसार को वे प्रभावित नहीं कर पाएंगे। पतरस के पाठकों को उनके द्वारा मसीह के संसार को बदलने से पूर्व मसीह द्वारा बदलना आवश्यक था। 3:8 में व्यवहार की ताड़नाओं की शृंखला में स्पष्ट रूप से कलीसिया के विरूद्ध आने वाली आलोचनाओं का उत्तर दिया गया। मसीही समाज के लिए हर शब्द में अपना निर्देश है : "अत: सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रतीति रखने वाले, और करुणामय, और नम्र बनो" (3:8)।

पतरस ने अपने पाठकों से पहले "एक मन" होने का आग्रह किया। इस वाक्यांश के लिए यूनानी शब्द नये नियम में केवल यही मिलता है। प्रेरित के कहने का यह अर्थ नहीं था कि अपने सामने आने वाले हर प्रश्न पर मसीही लोग पूरी तरह से सहमत हो जाएं। इसके बजाय हमारे सोचने का एक सामान्य ढंग अर्थात् एक बात पर सहमत होने का सामान्य ढंग होना चाहिए। पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को उसका आनन्द पुरा करने के लिए और इस समय की गई ताड़ना में कोई फर्क नहीं था। "तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक मी मनसा रखो" (फिलिप्पियों 2:2)।

"कृपामय" शब्द पतरस की सूची में दूसरे शब्द से लिया गया है। यहाँ और

रोमियों 12:15 में इस्तेमाल शब्द का अर्थ उसी पीड़ा और कष्ट को महसूस करना है, जो दूसरे व्यक्ति को लग रही है और इस प्रकार उसकी पीड़ा और कष्ट को दूर करने के लिए जो भी बन पड़े, करना है। पतरस यूनानी संसार में लिख रहा था, जो रोमी मनोरंजन के स्वाद में ढल रहा था यानी ऐसे मनोरंजन में जिसमें मरने तक लड़ने वाले गलैडिएटर्स भी शामिल थे। यह ऐसा संसार था जिसे करुणा और सहानुभूति की आवश्यकता थी।

कलीसिया के जीवन के लिए भाईचारे का प्रेम आधार है। मसीही लोगों के लिए एक-दूसरे से प्रेम करना आवश्यक था क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह में परमेश्वर के साथ अपने संबंध के द्वारा भाईचारे का एक सामानय बंध पहना था। इस प्रकार के प्रेम के लिए यूनानी शब्द का संज्ञारूप से एक एशियाई नगर का नाम रखा गया था जहाँ उन सात कलीसियाओं में से एक थी, जिसे प्रकाशितवाकय में यीशु ने सम्बोधित किया। एक बड़े अमेरिकी नगर को भी यही नाम मिला है।

यूनानी लोग दया के साथ-साथ हृदय से निकलने वाली अन्दर की भावनाओं को मानते थे। पतरस की सूची के चौथे शब्द "करुणामय" का मूल अर्थ है "अच्छी दया"। "तरस करने वाली मनों" है। फिलिप्पी के कलीसिया के नाम समुरने के पोलीकारत का दूसरी सदी का एक पत्र कहता है कि ऐल्डर "सबके साथ करुणामय (वही शब्द जिसका इस्तेमाल पतरस ने किया), दयालु, जो भटक गए हैं उनको वापस लाने वाले, सब निर्बल लोगों की देखभाल करने वाले, न तो विधवा, न अनार्थ, न निर्धन की उपेक्षा करने वाले हो।"

पतरस की सूची के अंतिम शब्द "नम्र" बनो का कारण है तथा अन्य शब्दों में "दीन बनो" (या इसके समान) है का सम्बंध वचन की विभिननता से है। यह नम्रता या दीनता के बीच अर्थ में किसी प्रकार एक-दूसरे को ठग लेने के कारण नहीं है। दीन व्यक्ति वह है, जो दूसरों का इतना ध्यान रखता है कि उसे इस बात की परवाह ही नहीं है कि उसने क्या प्राप्त किया है, वह क्या जानता है या उसके पास क्या है। उसकी दिलचस्पियां अपने आप से आगे हैं। वचन को समझने का बेहतर ढंग शायद घमण्ड या स्वार्थ जैसी विरोधी बातों में अन्तर करना है। दीनता उस समझ के साथ आती है जो हमें इस संभावना का सामना करने की अनुमति देती है कि हम गलत हो सकते हैं। यह चरित्र की वह सामर्थ, जिससे हम अपने पापों को मानकर अपनी गलतियों को स्वीकार कर सकते हैं।

सभ्य समाज के सबसे पुराने कानूनों में से एक यह है कि जैसे को तैसा दिया जाना चाहिए। निर्गमन 21:23, 24 में इससे श्रेष्ठ रूप दिया गया है।" ...प्राण के बदले प्राण का, और आंख के बदले आंख का, और दांत के बदले दांत का और पांवों के बदले पांवों का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो।" जैसा कि पहले मसीह ने किया था (मसीह 5:38-42), पतरस ने बड़े नियम के लिए रद्द कर दिया, "बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो, क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो" (3:9)।

मसीही धर्म पर इतनी स्पष्ट परीक्षा और कहीं नहीं आती, जितनी मसीही लोगों को बुराई के बदले भलाई और श्राप के बदले आशीष देने को कहा जाता है। पतरस

ने भजन संहिता 34:12-16 से उद्धृत किया। भजन लिखने वाला कह रहा था, "यदि तुम जीवन की भरपूरी और भलाई को जानना चाहते हो, तो अपने शब्दों को ध्यान से परखो।" यह एक ऐसा सबक है जिसे हम में से अधिकतर लोग सीख सकते हैं। एक अर्थ में भक्तिपूर्ण जीवन अपने अंदर झांकने की रोशनी है। यूहन्ना 12:24, 25 और कहीं यीशु इसी बड़े विरोधाभास को दिखा रहा था। जीवन के बहुआयामी पहलू और गहराईयां उन लोगों को मिले इनाम हैं, जो बुराई से मुड़ते, जो शांति की खोज करते, और जो सच्चाई और धार्मिकता के मार्ग पर चलते हैं। "प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है" (3:12)।

शायद हम पुराने और नये नियम के बीच के अन्तर को बहुत अधिक बना देते हैं। वही परमेश्वर जिसने इस्राएलियों के साथ बात की, उसी ने अपनी कलीसिया से बात की। पतरस को जीवन के उस नियम को आगे बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं थी, जो परमेश्वर ने पहले इस्राएल पर प्रकट किया था।

बुराई का उत्तर भलाई के लिए उत्तेजित होकर देना (3:13-17): अपने पत्र में दूसरी बार पतरस ने सीधे इन मसीही लोगों के कष्ट की बात की (3:13-17; पहली बार 1:6-9)। भलाई और धर्म के कारण आमतौर पर लोग दुख नहीं उठाते, दुख उठाना नियम नहीं है (3:13)। परन्तु प्रेरित ने स्वीकार किया कि यह माननीय है। ऐसे अन्त के लिए पतरस ने कई क्षेत्रों में सलाह दी।

केवल भलाई करने के लिए दुख उठाओ: मसीह को मानने वालों पर आने वाला हर कष्ट भलाई करने के कारण नहीं है। कई प्रकार का व्यवहार सब के लिए चाहे वह मसीही हो या नहीं, निंदा का कारण बन सकता है। यदि उसने कोई गलती की है, तो मसीही व्यक्ति कलीसिया की आड़ में बुराई करता है और दावा करता है कि उसे अपने विश्वास के कारण दुख उठाना पड़ रहा है। बेईमानी, झूठ बोलने, चोरी करने या ऐसे किसी काम के कारण दुख उठाने से आशीष नहीं मिलती।

असंभावित संभावना में कि उसके पाठकों पर भलाई करने के कारण दुख पड़ेगा, पतरस ने यशायाह भविष्यवक्ता के शब्दों में (3:14) सलाह दी, "जिस बात से वे डरते हैं, उससे तुम न डरना और न भय खाना" (यशायाह 8:12)। लोग मसीह व्यक्ति को सता सकते हैं या उसकी हत्या कर सकते हैं, परन्तु इससे बढ़कर वे उसका कुछ नहीं कर सकते। पतरस संभवतया यीशु के उन शब्दों को दोहरा रहा था जब उसने लिमिटेड कमीशन का प्रेरितों को भेजते हुए कहा था, "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है" (मत्ती 10:28)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस में जोड़ा, "प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है" (इब्रानियों 13:6)।

मसीह को अपने मन में पवित्र समझो: बहुत मामलों में संसार में होने वाली बातों पर मसीही व्यक्ति का कोई नियंत्रण नहीं होता, जो उनके वश में बाहर हो। चाहे संयोग से हो या अधार्मिक लोगों की शरारत के कारण, भलो से भले लोगों को भी कई बार बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। हम अपने ऊपर आने वाली हर बात को

नियंत्रित तो नहीं कर सकते परन्तु हम अपने मनों को नियंत्रि कर सकते हैं यानी हम अपने मनों को मसीह में पवित्र कर सकते हैं (3:15)। मसीह को पवित्र समझने का अर्थ प्रेम, समर्पण और श्रद्धा का एकमात्र स्थान उसी के लिए रखना है। यह अपनी पहली प्राथमिकता उसे देने के लिए आज्ञा मानना है।

उत्तर देने को तैयार रहो: आगे, पतरस ने कहा, "जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो..." (3:15)। आरंभिक शताब्दीयों में, कलीसिया के शत्रुओं ने मसीही लोगों पर अपनी सभाओं में अनैतिकता रखने, परिवारों के टूटने, सरकार को क्षति पहुंचाने और अनजाने अंधविश्वास में भाग लेने के आरोप लगाए हैं। इन आरोपों का उत्तर देने के लिए, पढ़े-लिखे लोगों ने लेख लिखे हैं "अपोलोगेस" कहा गया और उन्हें सम्राट या अन्य महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारियों के नाम लिखा गया। इस अर्थ में अपोलोजाइज का अर्थ मसीही शिक्षा तथा व्यवहार का तर्कसंगत, युक्तिसंगत सफाई देना है।

बीसवीं शताब्दी में मसीही विश्वास की भौतिक निष्ठा पर हमले कम नहीं हुए। बाइबल में मनुष्य के इतिहास में परमेश्वर के कार्य करने को हर जगह चुनौती दी जाती है। बिना किसी संदेह के कलीसिया को आज भी अपोलोजिस्टों अर्थात सफाई देने वालों की आवश्यकता है।

इन मसीही लोगों को अध्ययन करना आवश्यक था ताकि वे उत्तर देने के योग्य होते, परन्तु उत्तर देना ही काफी नहीं है। प्रेरित ने कहा कि उनके उत्तर "नम्रता और भय के साथ" (3:15) होने चाहिए। सच्चाई के बहुत से विवेकी खोजी मसीह से दूर चले गए हैं, संदेश के कारण नहीं बल्कि इसे देने वाले के अक्खड़, रूखे ढंग के कारण। कई लोग अपने सिर हिलाते हुए इसलिए निकल गए हैं क्योंकि संदेश में और सिखाने वाले के संदेश देने में कोई संबंध नहीं था। किसी हद तक सुसमाचार का हर सिखाने वाला, अपने आपको सिखा रहा होता है। पतरस ने कहा कि मसीह का संदेश नम्र और आदरपूर्वक ढंग से प्रस्तुति किया जाना आवश्यक है।

शुद्ध विवेक रखें: अपनी पहली पत्री में पतरस ने "विवेक" शब्द का इस्तेमाल तीन बार किया (2:19; 3:16, 21)। पौलुस ने अपनी पत्रियों में बार बार इसका इस्तेमाल किया। शुद्ध विवेक की अपील का अर्थ व्यक्तिगत निष्ठा की अपील है। निर्णय में गलतियां करना एक बात है परन्तु आरंभ से ही यह पता होने पर कि यह गलत होगा कार्य करते रहना दूसरी बात। पतरस ने कहा कि निष्ठावान मसीही पुरुष या स्त्री, जिसका जीवन उस विश्वास का नमूना है जिसे वह मानता है, अन्ततः परमेश्वर के लोगों को बदनाम करने और गलत अलगाने वाला अपने आप से लज्जित होगा। मसीही लोग अपनी शर्तों को ऐसे अच्छे और विवेक जीवनों से हराते हैं कि उन्हें मसीही संदेश के सार विचार करना ही पड़ता है।

आरोपों का उत्तर क्रूस के संदेश के साथ देना (3:18-22): बुराई के बदले हो या किसी अन्य बात से भलाई लौटाने में प्रभु अपने लोगों के लिए आदर्श है। पहले पतरस ने सेवकों के लिए नमूने के रूप में यीशु को रखा था (2:18-21); फिर उसने उसे उस सिद्ध उदाहरण के रूप में दिखाया जिसने बुराई का उत्तर भलाई से दिया था। यीशु अधर्मियों के पापों के लिए मरा (3:18)। पूरी मनुष्य जाति की

ओर से अपनी मृत्यु के द्वारा, वह हमें परमेश्वर के सामने ले जाने के योग्य है; परन्तु उसकी मृत्यु की कहानी में सब कुछ नहीं है। आत्मा में वह जिलाया भी गया था अविश्वास के लिए मसीही व्यक्ति का उत्तर अनन्त: यीशु के जी उठने में था।

फिर हमें नये नियम की सबसे कठिन दो आयतें 3:19, 20 मिलती है। हम यीशु के उन "आत्माओं को जो कैद में है" प्रचार करने के बारे में क्या समझते हैं जिन्होंने नूह के समय में आज्ञा नहीं मानी थी? आयतों के धर्मशास्त्रीय विचार और व्याकरणीय समस्याओं पर ध्यान करने के बावजूद इसका अर्थ अभी तक स्पष्ट नहीं है। हम इन कठिनाइयों की विस्तार से समीक्षा नहीं करेंगे पर हमारे लिए उन दो सामान्य ढंगों पर ध्यान देना उचित है जिनसे उन्हें समझा गया है।

सर्वनाम का पूर्ववर्ती स्पष्टतया आयत 18 का अंतिम शब्द "आत्मा" है। कइयों ने इस वाक्यांश की क्रियाविशेषण के रूप में लिया है। इस प्रकार जो प्रेरित कह रहा था कि यीशु ने नूह के समय के आज्ञा न मानने वाले लोगों में भौतिक रूप से नहीं बल्कि आत्मिक रूप से प्रचार किया। एक अर्थ में नूह या परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी भी व्यक्ति के प्रचार करने को यीशु के प्रचार करने के रूप में माना जा सकता है। आज्ञा न मानने वाली आत्माएं "कैद में" थी। यानी पतरस का अपना पत्र लिखने के समय वह कब्र में थी; परन्तु नूह के वचनों के द्वारा उन्हें प्रचार करने के समय जीवित थी।

इनमें से प्रत्येक व्याख्या की अपनी सामर्थ और कमजोरियां हैं, परन्तु पहली व्याख्या उसमें अधिक मेल खाती है जिसे हम शेष नये नियम में से यीशु के काम के रूप में जानते हैं। इस शिक्षा को कि क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद यीशु अधोलोक में नीचे गया था नये नियम का इतना समर्थन नहीं है, जब तक हम 3:18-22 को इसकी पुष्टि के लिए नहीं लेते। इस कारण यह समझ लेना बेहतर है कि यीशु लोगों के पास नूह के प्रचार में था जो उसी अर्थ में जल प्रलय से पहले था कि वह नबियों के प्रचार में था (1:10, 11)।

पतरस ने नूह और उसके परिवार का उल्लेख उनके बचाए जाने और मसीही लोगों के बचाए जाने के ढंग की समानता के कारण दिया (3:21)। नूह का उद्धार पानी के द्वारा हुआ था और मसीही लोगों का उद्धार भी पानी के द्वारा होता है। नूह और उसके परिवार का उद्धार पृथ्वी के पापपूर्ण जाति से शुद्ध होने से हुआ था और मसीही लोगों का उद्धार बपतिस्मे की धुलाई के द्वारा होता है। अन्य बातों में पतरस ने यह स्पष्ट किया कि अधर्मी व्यक्ति के लिए पापों से पीछा छुड़ाने के लिए यीशु की मृत्यु का असर होता है तो वह केवल बपतिस्मे के द्वारा होता है। उद्धार पाए हुओं को उद्धार न पाए हुओं से अलग करने वाली रेखा संक्षिप्त रूप में बपतिस्मे के बिन्दु पर है। पतरस ने कहा कि यह बपतिस्मा शरीर की मैल धोना नहीं बल्कि आज्ञापालन का एक आत्मिक कार्य है जो शुद्ध विवेक का उत्तर है। बपतिस्मा मसीह में विश्वास के कार्य के रूप में प्रभावकारी है। 3:22 के उसके परमेश्वर के दाहिने ओर होने की बात पीछे भजन संहिता 110:1 में ले जाती है। नया नियम मसीह के ईश्वरीय होने और प्रभु होने की गवाही के रूप में बार-बार इस वचन को दोहराता है।

सात घिनौनी वस्तुएं

डॉ. एफ. आर. साहू (सी.जी.)

"छः वस्तुओं से यहोवा (परमेश्वर) बैर रखता है, वरन सात है जिनसे उसको घृणा है; अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आखें, झूठ बोलने वाली जीभ और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़ने वाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़ने वाले पांव, झूठ बोलने वाला साक्षी और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य" (नीति 6:16-19)।

बुद्धिमान लेखक राजा सुलेमान ने अपने लेख में यह स्पष्ट कर दिया है कि परमेश्वर को किसी वस्तुओं से यदि कोई घृणा है तो वह सात वस्तुएं है जिनसे वह घृणा करता है। आइए हम उन सात वस्तुओं के विषय में गंभीरता से विचार करें। और ऐसी सात घिनौनी वस्तुओं के तोड़ या निदान के लिये परमेश्वर के वचन में हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पहली बात परमेश्वर को "घमण्ड" से चढ़ी हुई आंखों से घृणा आती है, जैसे लिखा है "घमण्ड से चढ़ी हुई आंखे।" याद रखें घमण्ड मसीहियों को अपने पापों को स्वीकार करने और मसीह को उद्धार कर्ता मानने से रोकता है।

अवश्य है कि हमने अपने पापों को मान कर मसीह को उद्धार कर्ता करके ग्रहण किया है, लेकिन अभी भी हमारे भीतर घमण्ड हमे उद्धार से वंचीत कर रहा है। उदाहरण के लिये (1 शमू 15:23)। देखें इस कहानी में हम देखते हैं कि शाउल का इस्राएल का राजा होने के लिये परमेश्वर की इच्छानुसार शमुएल नबी द्वारा अभिषेक किया गया था और शाउल ने राजा होने के पद को प्राप्त भी किया लेकिन अहंकार उसे परमेश्वर की दृष्टि में जो बुरा था वही करने के लिये मजबूर कर देता है। और परमेश्वर को तुच्छ जानने के परिणामस्वरूप उसे सब कुछ खोना पड़ा। इसी तरह से संसार में भी बहुत से ऐसे लोग है जो अपने को पास्टर्स कहकर मिथ्याभिमान में पड़ कर परमेश्वर के कार्य को तथा उसकी उपासना को अपने ही अनुशासन में अपनी रीति विधी अनुसार चलाने के परिणामस्वरूप वचन से भटक गये हैं। और तेरा मेरा चर्च की भावना में बहक कर घमण्ड के शिकार हो जाते है।

2 यूहन्ना 1:8, 9 हमें बताता है कि आज हम हर एक को अपने विषय में भी सावधान रहने की नितान्तता आवश्यकता है। संसार में बहुत से ऐसे भी लोग है जो अपने ज्ञान, बुद्धि पर वीरता पर और धनवैभव पर घमण्ड करते हैं।

पर वास्तविक घमण्ड क्या है? सच्चे और वास्तविक घमण्ड के विषय में यहोवा (परमेश्वर) कहाता है, "बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे न वीर अपनी वीरता पर न धनी अपने धन पर घमण्ड करे। परन्तु जो घमण्ड करे वह इस बात पर घमण्ड करे कि वह मुझे जानता है और समझता भी है" (यिर्म-9:23)।

हम मसीह में बुद्धिमान भी है और वीर योद्धा भी है और धनवान भी हैं इसलिये हमें केवल इसी बात पर घमण्ड करना चाहिए कि हम परमेश्वर को जानते भी हैं और समझते भी है। इसके अतिरिक्त हम भौतिक कोई भी ज्ञान बुद्धि शारीरिक बाहुबल या संसारिक धन पर घमण्ड करते हैं तो हम अभी भी न तो परमेश्वर को

जान पाएं है न समझ पाएं हैं।

घमण्ड से भरा व्यक्ती अक्सर परमेश्वर की आज्ञा को मानने से इंकार करता रहता है। आमतौर पर परमेश्वर द्वारा कलीसिया में ठहराई अगुवाई के विरूद्ध विद्रोह करने का कारण भी बनता है। नीतिवचन का लेखक हमें बताता है कि मनुष्यों में उसके विनाश या ठोकर खाने के पहले घमण्ड ही पैदा होता है। (नीति 16:18)।

दूसरा - परमेश्वर को झूठ बोलने वाली जीभ से घृणा है। झूठ बोलने वालों से उस झूठ बोलने वाली जीभ अर्थात झूठी जुबान पवित्र लोगों के बीच कलीसिया में बड़ी-बड़ी समस्याओं का कारण बनते है। बात तो यह है कि एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं।

सफिरा और हनन्या ने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और परिणामस्वरूप विश्वास से गिर पड़े और प्राण त्याग दिये। पतरस ने भी झूठ बोल कर यीशु का तीन बार इंकार किया और बाद में रो-रो कर पछताया।

प्रियो, मनुष्य की देह में सबसे खतरनाक कोई चीज़ पाई जाती है तो वह है उसकी जुबान और यदि जुबान अर्थात जीभ पर काबू न पाया जाये तो यह शरीर को नरक बना सकती है। (प्रकाशित वाक्य 21:8)।

राजा दाउद अपनी प्रार्थनाओं में यही कहता है "यहोवा झूठ बोलने वाले मुंह से और छली जीभ से मेरी रक्षा कर" भजन-120:2)।

पौलुस प्रेरित याद दिलाते हुए लिखता है - "एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों सहित उतार डाला है।" (कुलु-3:9)।

आपने ये कहावत अवश्य सुनी होगी कि "झूठ बोलना पाप है, गढ्ढे के अंदर सांप है, और वही तेरा बाप है" गढ़े का सांप क्या है? शैतान। और शैतान ऐसे मनुष्यों को हमेशा गड्हे की ओर ले जाता है और मनुष्य को तब तक पता नहीं चलता जब तक वह गढ्ढे में गिर न जाय। और जैसे बाइबल हमें बताती है कि झूठ का पिता शैतान है और वह जो झूठ बोलता है वह परमेश्वर की ओर से नहीं बल्कि शैतान ही की ओर से है। (1 यूहन्ना 3:8-10)।

प्रिय मित्रो, हम प्रयत्न करें कि एक दूसरे से वह चाहे मसीही हो या गैर मसीही कभी भी झूठ ना बोलें।

तीसरा- परमेश्वर को किसी निर्दोश का लहू बहाने वाले हाथों से घृणा है और इससे स्पष्ट है कि मनुष्यों को निर्दोष और दोषी लहू में अंतर करना चाहिए। इसलिये कानून का कोई भी अधिकारी हो या कोई और यदि कानून की अधिनियम के तहत दोषी को मृत्यु दण्ड दें तो वह निर्दोश का लहू बहाने वाला नहीं बल्की दोषी का लहू बहा रहा होता है।

चौथा - अनर्थ की कल्पना गढ़ने वाला मन अर्थात परमेश्वर को अनर्थ की कल्पना गढ़ने वाले मन से भी घृणा है। ऐसा देखा जाता है कि कई लोग बुरे कामों के ही सपने देखते रहते है और उसी के विषय अंतर्गत बातों को सोचते और करते रहते हैं।

नीति वचन - 23:7 हमें बताता है कि "मनुष्य जैसा वह अपने मन से विचार करता है वैसा वह आप है।" मनुष्य का मन का भेद कोई नहीं जान पाया और ये

मन सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होने के कारण मनुष्य अपने ही विचार के वशीभूत हो जाता है। (यिर्म-17:9)। और धोखे की बहुत सी हानीकारक वस्तुओं पर मन लगाकर अपने करूणा निधान परमेश्वर तक को छोड़ देते हैं। (योना-2:8)।

इसलिये यह याद रखें कि हम क्या-क्या विचार करते रहते हैं? नीति वचन का लेखक सिखाता है कि "सबसे पहले अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीति 4:23)।

व्यर्थ विचार करने के अलावा हम उन्हीं बातों पर विचार करें, जो जो बातें सत्य हो आदरणीय हो, उचित हो, सुहावनी हो, और मन भावनी हो, सदगुण और प्रशंसा की बातों पर ही ध्यान लगाना चाहिये। (फिली 4:8)।

पांचवा - परमेश्वर को बुराई करने के लिये बेग से दौड़ने वाले पावों से घृणा है। एक पांव वह भी है जो सु-समाचार के लिए उठता है, और वही पांव परमेश्वर की दृष्टि में अत्यंत सुहावने है। पर वह पांव जो किसी की बुराई करने के लिये बड़े बेग से उठता है तो परमेश्वर को उससे घृणा आती है। ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो किसी की बुराई को देख लेने या जान लेने के बाद उसे अपने तक सीमित रखने या दमन करने में नाकाम होने के कारण बड़े उतावले पन किसी से शेयर करने में देर नहीं करते। भजन का लेखक राजा दाऊद सिखाता है "बुराई को छोड़ और भलाई कर मेल को ढूंढ और उसी का पीछा कर। क्योंकि यहोवा (परमेश्वर) बुराई करने वालों के विमुख रहता है, ताकि उसका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले" (भजन 34:14-16)।

छठवां - परमेश्वर को झूठ बोलने वाला साक्षी ना पसंद है। यह बात सूची की दूसरी बात है अर्थात झूठ बोलने वाली जीभ से मेल खाता है। पर इसमें किसी दूसरे के विरूद्ध सरकारी कामों में और सामाजिक कामों में झूठी गवाही देना परमेश्वर की दृष्टि में भी एक अपराध के समान है। और उनका मापदण्ड भी अपराधी के अपराध का जैसा ही है। झूठी गवाही देना व्यक्तिगत जीवन के लिये बिलकुल अच्छा नहीं है। यह एक घिनौना पाप है।

सातवां - परमेश्वर उससे भी घृणा करता है जो भाईयों के बीच झगड़े उतपन्न करवाता है जैसे लिखा है - "जो दूसरे के अपराधों को ढांप देता है, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार-बार करता है वह परम मित्रो में भी फूट करा देता है" (नीति 17:19)।

और इसी से यह जाना जा सकता है कि हम प्रेम के खोजी है या मसीही भाईयों में फूट कराने वालों में से हैं। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि हम व्यक्ति गत रूप में किसी से परमेश्वर की सच्चाई को बता रहे होते हैं, तो कोई भाई बहन वहां जाकर कुछ और प्रकार के बीज बो रहे होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कड़वा हट, डाह, इर्ष्या, क्रोध, झलझलाहट, फूट विरोध और विधर्म के लिये शैतान को अवसर मिल जाता है। इसलिये ऐसी बातों में चौकसी बरतने की जरूरत है पढ़ें। (नीति 26:22-25)।

प्रियो, जिन-जिन चीजों से परमेश्वर को घृणा आती है वह है पाप और परमेश्वर पाप से घृणा करता है। तथा पाप मनुष्य को परमेश्वर से बिल्कुल अलग कर देता है। इसके परिणाम स्वरूप कोई प्रार्थनाएं भी नहीं सुनी जाती। (यशा-59:1-2)। पर बाइबल

हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर पाप से घृणा तो करता है, परन्तु वह पापीयों से प्रेम भी करता है इसलिये उसने अपना इकलौता बेटा बक्श दिया। यीशु मनुष्यों के अपराधों के कारण मर गया और मनुष्यों को धर्मी ठहराने के कारण मुर्दो में से जी उठा इसलिए एक मसीही होने के नाते हमारे कहने, बोलने, के द्वारा यदि इन सात चीजों में से कोई भी घृणित चीज हममें विद्यमान है तो क्या परमेश्वर हमसे प्रसन्न होगा? इस तरह की शारीरिक दशाओं में हम परमेश्वर को कभी भी प्रसन्न नहीं कर सकते।

जब परमेश्वर कहता है "नहीं"

जिम पोलार्ड

"नहीं" एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है, कह दिया और बात खत्म। यह एक ऐसा शब्द है जो लोग सुनना नहीं चाहते। और यह शब्द सबसे खराब तब लगता है जब परमेश्वर की ओर से हमारी प्रार्थना का उत्तर न में मिलता है। जब परमेश्वर नहीं कहता है तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह हमसे प्रेम नहीं करता या उसे हमारी परवाह नहीं है। बड़े दिल से परमेश्वर ने हमारे प्रति प्रेम दिखाकर कहा है कि, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:6-8)।

परमेश्वर ने अपने कुछ बड़े सेवकों से भी नहीं कहा था। प्रेरित पौलुस से कहा गया था नहीं। क्या आप सोच सकते हैं कि उसका एक ऐसा दास जिसने सुसमाचार के लिये अपना सब कुछ छोड़ दिया था। पौलुस ने प्रभु से कहा कि मेरा कांटा निकाल दे, अर्थात् यह शायद कोई शारीरिक बीमारी थी परन्तु प्रभु ने कहा मेरा अनुग्रह तेरी लिये काफी है। (2 कुरि. 12:7-10)।

परमेश्वर पिता ने एक बार अपने पुत्र यीशु को भी नहीं कहा था। यीशु का सामना मृत्यु से होने वाला था यानि उसे क्रूस की मृत्यु दी जानी थी। परमेश्वर पिता ने यीशु से कहा नहीं। यीशु ने तीन बार प्रार्थना की कि, "हे परमेश्वर हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं परन्तु, जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। (मत्ती 26:36-46)। हम जानते हैं कि यीशु ने कहा था कि यह कटोरा अर्थात मृत्यु टल जाये परन्तु उसे मृत्यु झेलनी पड़ी।

जब परमेश्वर किसी बात के लिये नहीं कहता है तो इसका कारण होता है। उसकी सोच हमारे से बहुत बड़ी है। बाइबल कहती है, "क्योंकि यहोवा कहता है मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है न तुम्हारी शक्ति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी ओर तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।" (यशायाह 55:8, 9)। इसलिये परमेश्वर जब किसी बात के लिये नहीं चाहता है तो हमें स्वीकार कर लेनी चाहिए।